एग्रीकल्चरल इंस्टीट्यूट में दिखा दूंगा । मैं इस काल में ज्यादा से ज्यादा इसका प्रचार करूंगा और यदि कोई माननीय सदस्य चाहें तो इसका बीज या पौध दे सकूंगा ।

SHRI N. SRI RAMA REDDY: How are these grasses superior to the local ones? What is the per acre yield?

SHRI RAM SUBHAG SINGH: I was just telling the House in Hindi that usual Napier grass fodder yield per acre is about 1 lakh pounds a year, bajra yield per acre is about 10 thousand pounds and jowar yield per acre is 25 thousand pounds. But this Pusa Giant Napier has given a yield per acre of 2.25 lakh pounds and the Anjan grass which has been evolved at Pusa has given an annual yield of 52 thousand pounds per acre. The usual Anjan grass has given a yield of 27 thousand pounds per acre. There is not much difference in the cultural practices of these two grasses and they can exist for five years, though of course for two years they give a very good yield. They do not require much water. If you irrigate them, they will give a better yield. We can have six cuttings annually from Pusa Giant Napier grass and eight cuttings from Pusa Giant Anjan grass.

SHRI N. M. LINGAM: I would like to know if any organised attempt is being made by the Ministry to popularise the use of this grass and to raise this grass in sufficient quantities in villages, in view of the scarcity of fodder, through Blocks and Pancha-yats, so that the present scarcity can be relieved.

SHRI RAM SUBHAG SINGH: Whatever seeds and plants are available, Sir, we shall have them introduced, as far as possible, through the Extension Services and also through the Research Institutes which exist in different parts of the country, as I mentioned about Bangalore.

SHRI SONUSING DHANSING PATIL: Can this grass be used throughout the length and breadth of the country depending upon **the** various climates, and recommended safely?

SHRI RAM SUBHAG SINGH: I shall ask the agricultural colleges to raise these grasses, and all the universities will also very much welcome it. I do not know whether they are all having farms but if they are having farms and if they want to introduce them, I shall be too happy to provide them seeds etc.

SHRI M. P. BHARGAVA: May I know. Sir, whether this grass has been chemically examined and whether experiments have been carried out to see that this grass can form the base for making paper?

SHRI RAM SUBHAG SINGH: Actually, Sir, we are short of fodder and we have been trying to introduce it and evolve it and go on improving these grasses with a view to meeting our fodder requirements; it is not being evolved from the point of view of paper pulp.

गेहूं के उत्पादन का खर्च

*३६९. श्री विमलकुमार मन्नालालजी चोरड़िया : क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या उनके मंत्रालय द्वारा इस बात की जांच की गई है कि एक एकड़ साधारण भूमि में गेहूं के उत्पादन में औसतन कितना खर्च आता है और उत्पादन कितना होता है; और

(ख) उत्पादन के खर्च के मान से कृषक को कुछ और लाभ हो सके, इस बारे में क्या योजना बनाई गई है ?

WHEAT PRODUCTION COST

*369. SHRI V. M. CHORDIA: Will the Minister of FOOD AND AGRICULTURE be pleased to state:

(a) whether any investigation has been made by his Ministry to ascer-

t[ ] English translation.

tain the average expenditure incurred on the production of wheat in one acre of ordinary land and the quantum of production obtained therefrom; and

(b) what scheme has been devised to enable the peasant to gain some more profit on the basis of the production cost?]

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री राम सुभग सिंह) : (क) अखिल भारतीय स्तर पर कोई जांच नहीं की गई है । १९५५–५७ की अवधि में उत्तर प्रदेश, पंजाब तथा महाराष्ट्र के कुछ जिलों में फार्म प्रबन्ध की अर्थ व्यवस्था के विषय में कुछ अध्ययन किए गए थे ।

(ख) कोई ऐसी विशेष योजना नहीं बनाई गई है जिससे कि कृषक को कुछ और लाभ हो सके । फिर भी, इस बात का विश्वास दिलाने के लिये कि किसान को मिलने वाले मूल्य में कोई अनुचित गिरावट न आने पाये, सरकार ने १९६१–६२ की फसल के लिये सफेद गेहूं की साधारण औसतन श्रेणी के लिये ३४·८२ रुपये प्रति क्विन्टल (१३ रुपये प्रति मन) के एक न्यूनतम सहायक मूल्य की घोषणा की है ।

f[THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FOOD AND AGRICULTURE (SHRI RAM SUBHAG SINGH) : (a) No all-India investigation has been carried out. During 1955-1957, some studies in the economics of farm management were conducted in a few districts of U.P., Punjab and Maharashtra.

(b) No particular scheme has been devised to enable the peasant to gain more profit. However, to ensure that there is no undue drop in prices received by the farmer, Government have announced a minimum support price of Rs. 34: 82 per quintal (Rs. 13 per maund) for fair average quality of white wheat for 1961-62 crop.]

t[ ] English translation.

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : क्या श्रीमान् यह बतलाने की कृपा करेंगे कि यह जो १३ रु० प्रति मन के हिसाब से प्राइस का शासन ने निर्धारण किया है, तो इसमें कुछ ऐसा अनुमान लगाया है अथवा नहीं कि १३ रु० प्रति मन के भाव रखने पर काश्तकार को लाभ हो सकेगा या हानि हो सकेगी या वह लाभ हानि बराबर में रह सकेगा ?

श्री राम सुभग सिंह : असल में अभी १३ रु० प्रति मन से कम में देश में कहीं नहीं है और महाराष्ट्र, पंजाब और उत्तर प्रदेश में १९५५–५७ की अवधि में जो जांच की गई थी उसमें १३ रु० से ज्यादा उत्पादन खर्च नहीं पड़ा था । तो इसलिये यह उतनी घाटे की रकम नहीं होगी ।

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : यह जो श्रीमान् १३ रु० का हिसाब बतला रहे हैं, तो वह कौन से वर्ष में निकाला गया था और क्या श्रीमान् यह भी बताने की कृपा करेंगे कि देश में खाद्यान्नों की कमी को देखते हुए क्या इस तरह की कोई योजना शासन के विचाराधीन है कि हम किसानों को अधिक उपजाने के लिये अधिक क़ीमत दे कर इन्सेन्टिव्ह दे सकें ?

श्री राम सुभग सिंह : जैसा कि मैंने पहले कहा था, वह जांच १९५५–५६ और १९५६–५७ में की गई थी । क़ीमतों का निर्धारण उत्पादन बढ़ाने के लिये एक बड़ी बात है और यह जरूर होना चाहिये और खाद्य व कृषि मंत्रालय इस पर काफ़ी ध्यान दे रहा है । लेकिन इसके साथ साथ, उत्पादन बढ़ाने से भी प्रति एकड़ उपज अगर बढ़ जाय, दस मन की बजाय पन्द्रह मन हो जाय, तो न्यूनतम दाम १३ रु० पर भी किसानों को फ़ायदा हो सकता है । एक ओर जहां यह मंत्रालय इस बात का प्रयास

कर रहा है कि क़ीमतें ऐसी हों चाहे उत्पादक हो, वे इस प्रकार से कि जिससे दोनों में से किसी को घाट पड़े, वहां दूसरी ओर यह ध्यान दिया रहा है कि हम ज्यादा से ज्यादा उत्पा बढ़ाएं और इसीलिये अभी पंजाब माननीय सदस्य जानते होंगे, क ५०,००० टन खाद केवल गेहूं के में डाला गया, इसलिये कि उसका उत्पा प्रति एकड़ बढ़ाया जाय । तो हम यह ध्यान ज़रूर रखेंगे कि कोई भी उत्पा किसी प्रकार के घाटे में नहीं पड़े क़ीमत भी उसी तरह की होगी ।

SHRI A. D. MANI: May I know, Sir, the difficulty in the way of the Government taking sampling tests on certain farms to find out the extent of production of wheat?

SHRI RAM SUBHAG SINGH: We shall try to see how far this suggestion is going to be feasible though, of course, our effort will be to see that something is done.

श्री देवकीनन्दन नारायण : क्या मंत्री महोदय यह बतलाने की कृपा करेंगे कि जो जांचें १९५५–५६ और १९५७–५८ में की गई उनका फल क्या आया ?

श्री राम सुभग सिंह : फल यह आया था कि पंजाब में ग़ैर-सिंचाई वाले इलाके में प्रति मन के उत्पादन में ७ रु० से ९ रुपये पड़ा और उत्तर प्रदेश में ग़ैर-सिंचाई वाले इलाके में ९ रु० से १३ रु० प्रति मन पड़ा था । इसी तरह से सिंचाई वाले इलाके में ९ से १२ रु० प्रति मन पड़ा था । महाराष्ट्र में भी ग़ैर-सिंचाई वाले इलाके में ९ से १२ रु० प्रति मन पड़ा था । तो यह फल था । आप कह सकते हैं १९५७ देर की अवधि हुई लेकिन हम लोग बराबर ध्यान रखेंगे कि किसी प्रकार की कोई गफ़लत नहीं होने पाये ।

श्री जयनारायण व्यास : क्या मंत्री महोदय को यह पता है कि गेहूं के भाव १३ रु० निर्धारित करने के बाद सरसों और तिल उगाने में किसान लोग ज्यादा दिलचस्पी लेते हैं, क्योंकि सरसों और तिल में ३० से ४० रु० मन उनको मिल जाता है ?

श्री राम सुभग सिंह : असल में, माननीय सदस्य को पता होगा कि , २३ रु० जो है यह न्यूनतम कीमत है और उसकी अधिकतम कीमत कोई भी हो सकती है सरसों, तिल और तेल पैदा करने संबंधी अन्य प्रकार के अनाजों का भी उत्पादन करने का ज़िम्मा खाद्य और कृषि मंत्रालय को है और उनकी भी उपज हम बढ़ाना चाहते हैं, तिलहन जितने प्रकार के हैं उन सब का उपज हम बढ़ायेंगे । यदि गेहूं की क़ीमत आम बाजार में १६ और तिलहन की क़ीमत २५ या ३० लगती है, तो उतनी झंझट नहीं होती है । फिर भी उन के सुझाव पर हम ध्यान दे सकते हैं ।

ACTION AGAINST PERSONS RESPONSIBLE FOR SELLING SALT AS AMMONIUM SULPHATE

*370. SHRI DAHYABHAI V. PATEL:' Will the Minister of FOOD AND AGRICULTURE be pleased to state what steps the Government of India have taken to detect and trace persons responsible for selling salt as ammonium sulphate to agriculturists, their organisation and network?

THE MINISTER OP STATE IN THE MINISTRY OF FOOD AND AGRICULTURE (SHRI RAM SUBHAG SINGH): A statement giving the' required in-\ formation is laid on the Table of the Sabha.

STATEMENT

It was brought to the notice of the I Government of India in 1961 that • Sodium Sulphate was being sold *to* I cultivators in Maharashtra and Guja-